स्पिनोज़ा

बुद्धिवादी दार्शनिक

डेकार्ट द्वारा प्रारंभ किया गया बुद्धिवाद स्पिनोज़ा के दर्शन में विकसित होता है। उनके अनुसार भी समस्त ज्ञान का स्रोत बुद्धि है।

स्पिनोज़ा के मन में धार्मिक शिक्षा के प्रति गहरा असंतोष था। अतः वे गणित और विज्ञान की ओर उन्मुख हुए।

ग्रंथ →

1. Ethics - आचारशास्त्र
2. The principles of the philosophy of Descartes.
3. God and man

दार्शनिक प्रणाली → डेकार्ट के समान ही स्पिनोज़ा भी गणित से बहुत प्रभावित थे। अतः उन्होंने भी गणितीय प्रणाली का समर्थन किया। स्पिनोज़ा कहते हैं कि सत्य स्वयंसिद्ध है, इसकी सिद्धि के लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है।

स्पिनोज़ा दार्शनिक समस्याओं का विश्लेषण ज्यामिति के समान ही करते हैं। वे सर्वप्रथम परिभाषा देते हैं, पुनः विश्लेषण करते हैं और अंत में आवश्यक और निश्चित निष्कर्ष निकालते हैं। इनकी प्रणाली में संदेह का कोई स्थान नहीं है।

स्पिनोज़ा की पद्धति प्रयोगात्मक एवं निगमनात्मक है। इनके अनुसार दार्शनिक सत्यों का उद्गम प्रज्ञा (Intuition) है। दार्शनिक सत्यों के मौलिक आधार प्रज्ञात्मक अर्थात् स्वानुभूतिजन्य है, बुद्धिजन्य नहीं। हमारी बुद्धि इन सत्यों से निगमनात्मक रीति से निष्कर्ष निकालती है।

स्पिनोज़ा मानते हैं कि ईश्वर विचार ही मौलिक एवं आधारभूत विचार है। अन्य सभी विचार इसी से निकलते हैं तथा इसी पर आधारित है। जिस प्रकार गणित में आधार वाक्यों की सत्यता मान लेने पर अन्य वाक्यों की सत्यता स्वतः ही निगमनात्मक तरीके से सिद्ध हो जाती है।

स्पिनोज़ा कहते हैं कि बुद्धि प्रज्ञाजन्य वाक्यों को आधार मानकर अपना निष्कर्ष निकाल लेती है।

विचार करने की प्रक्रिया में एक विचार से दूसरा विचार उत्पन्न होता है। यह शृंखला तब तक चलती रहती है जब तक यथार्थ निष्कर्ष न प्राप्त हो जाए। इस प्रकार यह प्रणाली निगमनात्मक है।

द्रव्य (ईश्वर)

स्पिनोज़ा के अनुसार द्रव्य वह है जिसकी सत्ता स्वतंत्र हो, निरपेक्ष हो और जिसके ज्ञान के लिए अन्य ज्ञान की आवश्यकता न हो, अर्थात् जो अपने अस्तित्व और ज्ञान के लिए किसी पर आश्रित न हो।

इस आधार पर केवल एक ही परम द्रव्य है और वह है - ईश्वर, जो एक, अद्वैत, स्वतंत्र, स्वयंभू तथा स्वतः सिद्ध है।

1. ईश्वर ही एकमात्र द्रव्य है → स्पिनोज़ा के अनुसार द्रव्य और ईश्वर पर्यायवाची हैं। वह निरपेक्ष और कारण रहित है। ईश्वर अद्वितीय तथा असीमित सत्ता है।

2. ईश्वर की सत्ता स्वत: सिद्ध है → स्पिनोज़ा कहते हैं कि ईश्वर को सिद्ध करने के लिए किसी अन्य ज्ञान की आवश्यकता नहीं है। उसकी सत्ता स्वत: सिद्ध है, जिसका ज्ञान हमें प्रज्ञा (Intuition) से होता है।

3. द्रव्य की विशेषताएँ → द्रव्य स्वतंत्र, निरपेक्ष, असीमित पूर्ण, स्वत: सिद्ध, नित्य तथा स्वयंभू है। ऐसा द्रव्य केवल ईश्वर ही है।

4. ईश्वर सर्वव्यापी है → स्पिनोज़ा कहते हैं कि ईश्वर सृष्टि के कण-कण में व्याप्त है। सबकुछ द्रव्य है।

5. सर्वेश्वरवाद → स्पिनोज़ा के अनुसार ईश्वर सबमें है और सबकुछ ईश्वर में है। ईश्वर के भिन्न कुछ भी नहीं है।

6. एकतत्त्ववाद → स्पिनोज़ा अद्वैतवाद के समर्थक हैं। वे मानते हैं कि परम द्रव्य केवल एक ही है - ईश्वर और इसके अतिरिक्त किसी अन्य की सत्ता नहीं है। यही एकतत्त्ववाद है।

7. ईश्वर निर्गुण-निराकार है → स्पिनोज़ा ईश्वर को गुण रहित सत्ता मानते हैं।

से मानते हैं कि ईश्वर को गुणों की सीमा में नहीं बांधा जा सकता। निर्गुण और निराकार ईश्वर ही सब-रूप में व्याप्त हो सकता है।

8. ईश्वर अनिर्वचनीय है – स्पिनोजा कहते हैं ईश्वर निर्गुण है अतः उसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता।

9. ईश्वर अद्वितीय सत्ता है – स्पिनोजा कहते हैं कि ईश्वर के अतिरिक्त अन्य सत्ता है ही नहीं। सृष्टि में जो विभिन्नता दिखाई देती है वह एक ही तत्त्व के विभिन्न रूप है।

10. सृष्टि रचना ईश्वर का सहज स्वभाव है – स्पिनोजा कहते हैं कि सृष्टि का एकमात्र और सर्वप्रथम कारण ईश्वर है। सृष्टि ईश्वर का सहज स्वभाव है। यह ईश्वर की आवश्यक अभिव्यक्ति है। जिस प्रकार तीन कोणों के बिना त्रिभुज की कल्पना नहीं की जा सकती, उसी प्रकार सृष्टि के बिना ईश्वर का विचार असंभव है।

11. ईश्वर के दो गुण हैं - चित एवं अचित – स्पिनोजा के अनुसार गुण द्रव्य के वे धर्म हैं जो बुद्धि उस पर आरोपित करती है अर्थात जो बुद्धि को दिखाई देते हैं। इस प्रकार ईश्वर स्वयं तो निर्गुण है लेकिन हमें उसमें चेतन-अचेतन दो गुण दिखाई देते हैं।

गुण

स्पिनोज़ा कहते हैं कि वास्तव: द्रव्य निर्गुण-निराकार है लेकिन हमारी बुद्धि उस पर गुण आरोपित कर देती है। अत: गुण द्रव्य के वे धर्म हैं जो बुद्धि को दिखाई देते हैं, वास्तविक नहीं होते।

इस प्रकार मानव बुद्धि ईश्वर में दो गुण आरोपित करती है - चित् और अचित्। इनसे जगत् की सभी चेतन और अचेतन सत्ताओं की व्याख्या हो जाती है।

पर स्पिनोज़ा ईश्वर को सगुण नहीं मानते क्योंकि सगुण मानने से ईश्वर सीमित हो जाता है, जबकि ईश्वर असीमित है।

पर्याय

पर्याय द्रव्य के परिवर्तनशील धर्म हैं। ये भी बुद्धि द्वारा आरोपित होते हैं, वास्तविक नहीं।

गणितीय रहस्यवाद → जिस प्रकार गणित में स्वयंसिद्ध आधारवाक्यों से निश्चित निष्कर्ष निकालते हैं, उसी प्रकार ईश्वर को स्वतःसिद्ध आधारभूत सत्य मानकर प्रकृति की व्याख्या की जाती है कि प्रकृति ईश्वर का ही अनिवार्य परिणाम है। यह सिद्धांत गणितीय रहस्यवाद कहलाता है।

आलोचना :-

1. स्पिनोज़ा के अनुसार ईश्वर सृष्टि का स्वतः सिद्ध कारण है लेकिन आलोचक कहते हैं कि ईश्वर विश्व की सृष्टि कैसे व क्यों करता है ?
यहाँ स्पिनोज़ा कहते हैं कि ईश्वर निष्प्रयोजन स्वभाववश विश्व की सृष्टि करता है। किसी भी प्रकार का प्रयोजन ईश्वर को सीमित कर देता है।

2. आलोचक कहते हैं कि स्पिनोज़ा की धारणा हमारी धार्मिक बुद्धि को सन्तुष्ट कर सकती है, दार्शनिक बुद्धि को नहीं।